Toppersnotes®
Unleash the topper in you

उत्तराखण्ड

टैक्स एवं रेवेन्यू इंस्पेक्टर

उत्तराखण्ड लोक सेवा आयोग (UKPSC)

भाग - 4

उत्तराखण्ड का सामान्य ज्ञान

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	उत्तराखंड के ऐतिहासिक स्रोत	1
2	प्रागैतिहासिक काल में उत्तराखंड	3
3	उत्तराखंड का आद्य ऐतिहासिक काल	6
4	उत्तराखंड के प्राचीन राजवंश	8
5	गढ़वाल में परमार (पंवार) या शाह राजवंश का शासन	13
6	कुमाऊ में चंद शासन	18
7	उत्तराखंड (कुमाऊं और गढ़वाल) में गोरखा शासन	25
8	उत्तराखंड का मध्यकालीन इतिहास	29
9	उत्तराखंड में ब्रिटिश शासन	33
10	उत्तराखंड राज्य आंदोलन	37
11	उत्तराखंड में विभिन्न लोकप्रिय जन आन्दोलन	43
12	राष्ट्रीय आन्दोलन में उत्तराखंड की भूमिका	47
13	टिहरी राजवंश और टिहरी स्वतंत्रता आंदोलन	51
14	उत्तराखंड– अवस्थिति और विस्तार	53
15	उत्तराखंड की प्राचीन जनजातियाँ	56
16	उत्तराखंड का भौतिक विभाजन	59
17	उत्तराखंड के भू–आकृतिक विशेषताएँ	66
18	उत्तराखंड का अपवाह तंत्र	73
19	मृदा	85
20	उत्तराखंड की प्राकृतिक वनस्पति	87
21	उत्तराखंड का वन्यजीवन और संरक्षण	92
22	उत्तराखण्ड की जलवायु	99
23	उत्तराखंड में कृषि एवं संबंधित क्षेत्र	103

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	उत्तराखंड में उद्योग	114
25	उत्तराखण्ड के खनिज संसाधन	122
26	ऊर्जा और जलविद्युत	125
27	परिवहन एवं संचार	131
28	जनसांख्यिकीय प्रोफ़ाइल जनसंख्या और जनगणना	139
29	उत्तराखंड में पर्यटन और प्रमुख पर्यटन स्थल	145
30	उत्तराखंड राजव्यवस्था की आधारभूत सरंचना	153
31	उत्तराखंडः कार्यपालिका	157
32	उत्तराखंड_ विधानमंडल	161
33	उत्तराखंडः न्यायपालिका	165
34	उत्तराखंड में स्थानीय शासन	172
35	उत्तराखंड की संवैधानिक संस्थाएँ	182
36	उत्तराखंड के गैर–संवैधानिक निकाय	187
37	उत्तराखंड के महत्वपूर्ण नवीनतम कानून	199
38	उत्तराखण्ड में राजस्व पुलिस व्यवस्था	201
39	उत्तराखंड की चित्रकला	204
40	उत्तराखंड के लोकगीत	206
41	उत्तराखंड के लोकनृत्य	208
42	उत्तराखंड की शिल्पकला एवं बोलियाँ	210
43	उत्तराखंड के लोक वाद्य यन्त्र	214
44	उत्तराखंड के प्रमुख मेले एवं त्यौहार	215
45	उत्तराखंड के लोक नायक एवं रंगकर्मी	220
46	उत्तराखंड का धार्मिक परिदृश्य	235

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
47	उत्तराखंड की वेशभूषा एवं खान पान	244
48	उत्तराखंड की महत्वपूर्ण हस्तियां	248
49	उत्तराखंड में मानव विकास	256
50	उत्तराखंड में शहरी बस्तियाँ	262
51	उत्तराखंड में ग्रामीण बसावट के स्वरूप	264

1 CHAPTER उत्तराखंड के इतिहास के स्रोत

उत्तराखंड की एक समृद्ध ऐतिहासिक विरासत है जिसकी शुरुआत पाषाण काल से ही मानी जाती है। यहाँ विभिन्न स्थलों से प्राप्त पुरातात्विक साक्ष्य प्रागैतिहासिक काल में मानव निवास का संकेत देते हैं। हालांकि, ऐतिहासिक अभिलेखों की कमी के कारण क्षेत्र के इतिहास के पुनर्निर्माण में इतिहासकारों को चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अतः इसका अध्ययन करने के लिए वे पुरातात्विक खोजों और साहित्यिक स्रोतों की सहायता लेते हैं।

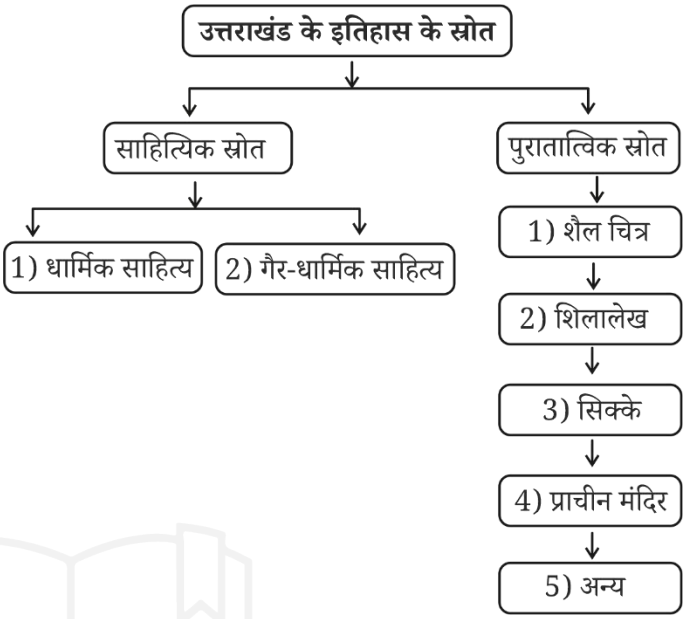

उत्तराखंड के इतिहास के स्रोत

1. साहित्यिक स्रोत

उत्तराखंड के इतिहास की जानकारी विभिन्न धार्मिक और गैर-धार्मिक साहित्यिक स्रोत से प्राप्त होता है, जो अस्पष्ट और गैर-ऐतिहासिक प्रकृति के बावजूद भी अतीत की मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

A. धार्मिक साहित्यिक स्रोत

धार्मिक साहित्य	साहित्य	उत्तराखंड का संदर्भ	प्रमुख विवरण
वैदिक/हिंदू ग्रंथ	वेद	"देवभूमि" (देवताओं की भूमि), "मनीषियों की भूमि" (ऋषियों की भूमि)।	देवताओं और ऋषियों के आशीर्वाद से धन्य पवित्र भूमि।
	उपनिषद	छांदोग्य उपनिषद, बृहदारण्यक उपनिषद में।	उत्तराखंड का उल्लेख आध्यात्मिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में किया गया है।
	ब्राह्मण ग्रन्थ	ऐतरेय ब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण में।	क्षेत्र के रीति-रिवाजों और परंपराओं से सम्बंधित तथ्य।
	पुराण	वायु पुराण, विष्णु पुराण, शिव पुराण, मत्स्य पुराण में।	देवताओं की भूमि, नदियों और जनजातियों का विशेष उल्लेख।
	रामायण	उत्तराखंड से सम्बंधित स्थल, जैसे केदारनाथ, ऋषिकेश।	रामायण महाकाव्य से संबंधित प्रमुख स्थल।
	महाभारत	उत्तराखंड का कई बार उल्लेख, जैसे बद्रीनाथ, हरिद्वार।	महाभारत महाकाव्य में पवित्र स्थल।

बौद्ध साहित्य	जातक	उत्तराखंड के सामाजिक-राजनीतिक संदर्भ का उल्लेख।	नैतिक मूल्य और नैतिक शिक्षाओं को दर्शाने वाली कहानियाँ।
	वादन	बौद्ध धर्मग्रंथों में उत्तराखंड के विभिन्न स्थलों पर प्रकाश डाला गया है।	प्रारंभिक बौद्ध इतिहास में उत्तराखंड का चित्रण।
	महावंश	बौद्ध शिक्षाओं के संदर्भ में उत्तराखंड का ऐतिहासिक संदर्भ।	प्राचीन काल में इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म के प्रभाव का उल्लेख।
जैन साहित्य	बृहत्कथा	उत्तराखंड का उल्लेख और जैन धर्म के प्रसार की चर्चा।	उत्तराखंड में जैन धर्म के प्रभाव का विवरण दिया गया है।
	महापुराण	उत्तराखंड के शासकों और जैन धर्म के प्रभाव का उल्लेख।	शासकों और धार्मिक विकास का इतिहास।

B. गैर-धार्मिक ग्रंथ

- प्राचीन इतिहासकार: हेरोडोटस, प्लिनी और टॉलेमी की रचनाओं में उत्तराखंड का उल्लेख मिलता है।
- भारतीय साहित्य:
  - ✓ पाणिनि की अष्टाध्यायी में उत्तराखंड का उल्लेख है।
  - ✓ कालिदास की रचनाएँ: रघुवंशम्, मेघदूतम्, कुमारसंभवम्।
  - ✓ बाणभट्ट की हर्षचरित।
  - ✓ कल्हण की राजतरंगिणी।
  - ✓ मेगस्थनीज की इंडिका।
- विदेशी यात्रियों के यात्रा वृतांत: फाह्यान, ह्वेनसांग आदि के यात्रा वृत्तांतों में उत्तराखंड का उल्लेख मिलता है।
- स्थानीय लोककथाएँ: "जागर" और अन्य लोककथाएँ गढ़वाल और कुमाऊं की ऐतिहासिक संस्कृति को दर्शाती हैं।

2. पुरातात्विक स्रोत

पुरातात्विक स्रोत	विवरण	उदाहरण
शैल-चित्र	प्रागैतिहासिक शैल-चित्र और उत्कीर्णन मानव अस्तित्व के प्रमाण देते हैं।	उत्तराखंड में विभिन्न स्थलों पर प्रारंभिक निवासियों के साक्ष्य मिलते हैं।
अभिलेख	पाषाण और ताम्रपत्रों पर ब्राह्मी लिपि में पाली, प्राकृत या संस्कृत में रचित लेख मिले हैं।	कत्यूरी शिलालेख, प्रयाग प्रशस्ति, मथुरा, खजुराहो, आदि।
सिक्के	चांदी, तांबे और मिश्र धातुओं के सिक्के इस क्षेत्र में पाए गए हैं।	कुनिंदा सिक्के व्यापार, अर्थव्यवस्था और धर्म के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं।
प्राचीन मंदिर	विभिन्न मंदिर और मूर्तियाँ राजवंशों की स्थापत्य कला को दर्शाते हैं।	बद्रीनाथ, केदारनाथ, जागेश्वर, कटारमल मंदिर आदि।
अन्य पुरातात्विक साक्ष्य	इस क्षेत्र में मिट्टी के बर्तन, समाधि स्थल, औजार और अन्य वस्तुएँ खोजी गई हैं।	कलाकृतियाँ सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन के बारे में अतिरिक्त जानकारी प्रदान करती हैं।

ये साहित्यिक और पुरातात्विक स्रोत समग्र जानकारी प्रदान करते हैं जो उत्तराखंड के इतिहास के पुनर्निर्माण में सहायता करते हैं।

2 CHAPTER प्रागैतिहासिक काल में उत्तराखंड

पहले यह माना जाता था कि उत्तराखंड की पहाड़ी इलाकों और कठोर जलवायु ने इसे प्राचीन काल में रहने योग्य नहीं बनाया। हालांकि, इतिहासकारों और मानव विज्ञानियों के हालिया शोध से इस क्षेत्र के इतिहास के पाषाण युग तक के साक्ष्य मिले हैं। उपकरणों, रॉक शेल्टर्स, गुफा चित्रों, कप के निशानों और दफन स्थलों जैसी खोजें इस क्षेत्र में प्रारंभिक मानवों के जीवन के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती हैं। उत्तराखंड का इतिहास निम्नलिखित रूप में विभाजित है:

उत्तराखंड का इतिहास

प्रागैतिहासिक काल

यह वह काल है जब लिखित साक्ष्य नहीं मिलते। उत्तराखंड के विभिन्न स्थलों से पाषाण युग से जुड़े साक्ष्य मिले हैं, जैसे गुफा चित्र, पत्थर के औजार, हड्डियां, मटके, धातु के औजार आदि।

प्रारंभिक ऐतिहासिक काल

यह एक संक्रमण काल है जो प्रागैतिहासिक और ऐतिहासिक काल के बीच का है। उत्तराखंड का प्रारंभिक इतिहास कई धार्मिक ग्रंथों जैसे वेद, रामायण, महाभारत, पुराणों आदि से पुनर्निर्मित किया जा सकता है।

ऐतिहासिक

प्राचीन उत्तराखंड
- प्राचीन जनजातियाँ
- कुनिंदा
- अन्य राजवंश जिन्होंने उत्तराखंड पर शासन किया
  - o मौर्य
  - o शक
  - o कुषाण
  - o उत्तर–कुषाण
  - o गुप्त और कर्त्रीपुर
  - o उत्तर–गुप्त
  - o हर्ष
  - o उत्तर–हर्ष
  - o कार्तिकेयपुर

मध्यकालीन उत्तराखंड
- कत्यूरी वंश (कुमाऊं)
- परमार वंश (गढ़वाल)
- चंद वंश (कुमाऊं)

आधुनिक उत्तराखंड
- गोरखा शासन
- उत्तराखंड में ब्रिटिश शासन
- टिहरी राज्य

पृथक राज्य आन्दोलन

राज्य गठन के बाद की प्रमुख घटनाएं

प्रागैतिहासिक काल से जुड़े साक्ष्य को विभिन्न समयावधि में वर्गीकृत किया गया है। प्रमुख समयावधि निम्नलिखित हैं:

1. निम्न पुरापाषाण काल
   - ✓ निष्कर्ष: निम्न पुरापाषाण काल के उपकरण और साक्ष्य यहां खोजे गए:
     - कालसी (यमुना नदी तट)।
     - श्रीनगर (अलकनंदा नदी)।
     - खुटानी गधेरा (नैनीताल जिला)।
     - पूर्वी रामगंगा नदी (अल्मोड़ा जिला)।
2. मध्य पुरापाषाण काल
   - ✓ निष्कर्ष: श्रीनगर में अलकनंदा नदी के किनारे खोजें की गई हैं।
3. उत्तर पुरापाषाण काल
   - ✓ निष्कर्ष: उत्तराखंड में आज तक इस काल का कोई साक्ष्य नहीं मिला है।
4. पुरापाषाण काल
   - ✓ निष्कर्ष: एम. पी. जोशी द्वारा जासकोट के निकट क्वार्टजाइट से बने औजार खोजे गए।

5. नवपाषाण युग

5.1 कलाकृतियाँ और संरचनाएँ:

- ✓ कप-चिह्न: नक्काशीदार छापें, जो संभवतः अनुष्ठानों या प्रतीकात्मक उद्देश्यों के लिए उपयोग की जाती थीं, विभिन्न साइटों पर पाई गई हैं। जैसे :
  - ▪ द्वाराहाट (पांडुखोली), सोमेश्वर, चंद्रेश्वर मंदिर (अल्मोड़ा जिला)।
  - ▪ खेखन, जसकोट, देवीधुरा, गोपेश्वर, पश्चिमी नगर नदी।
- ✓ ये कप के निशान उन निशानों के समान हैं जो बुर्जहोम (कश्मीर) में पाए गए थे, जैसा कि एम. पी. जोशी ने उल्लेख किया है।

5.2 अंत्येष्टि :

- ✓ बुर्जहोम के समान दफन संरचनाएं पाई गई हैं, जो संभावित आवास स्थलों का संकेत देती हैं।

6 मेगालिथिक युग

उत्तराखंड में कुछ स्थलों पर मेगालिथिक कप के निशान पाए गए हैं, जिन्हें ओकल के नाम से जाना जाता है, जो मेगालिथिक पाषाण युग (3000–4000 ईसा पूर्व) तक के हैं। यह प्राचीन नक्काशी बड़े पत्थरों पर की गई थी, जो प्रागैतिहासिक काल में इनके व्यापक उपयोग और महत्व को दर्शाती है।

- ✓ सुरेगवाल मुनिया चूड़ा गांव: यह उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले के द्वाराहाट ब्लॉक में जलाली-मासी मार्ग के किनारे स्थित है। यह गांव अपनी प्राचीन पुरातात्विक खोजों के लिए महत्वपूर्ण है।
- ✓ जॉयू गांव: यहां भी समान कप के निशान पाए जाते हैं। इन्हें उत्तराखंड की सबसे पुरानी खोजों में से एक माना जाता है।

6.1 इन महापाषाण-चरण संरचना के संबंध में स्थानीय मान्यताएँ और परंपराएँ-

- ✓ पांडवों से संबंध: स्थानीय लोक कथाएं इन कप के निशानों का निर्माण पांडवों से जोड़ती हैं, जो महाभारत के प्रसिद्ध पात्र हैं।
- ✓ सांस्कृतिक महत्व: ये कप के निशान स्थानीय जनसंख्या द्वारा गहरी श्रद्धा के साथ पूजे जाते हैं और प्राचीन परंपराओं के पवित्र अवशेष माने जाते हैं।
- ✓ धार्मिक प्रथाएं: प्रागैतिहासिक काल में इन कप के निशानों का उपयोग धार्मिक अनुष्ठानों, जैसे यज्ञों (बलि अनुष्ठान) में किया जाता था।
- ✓ व्यावहारिक उपयोग: इन संरचनाओं का उपयोग बीजों से तेल निकालने और अनाज की प्रसंस्करण जैसी व्यावहारिक जरूरतों के लिए भी किया जाता था। उनका कार्यात्मक डिजाइन प्रारंभिक मानव सभ्यताओं की बुद्धिमत्ता और संसाधन शीलता को दर्शाता है।

उत्तराखंड में पाए जाने वाले शैलाश्रय और गुफा चित्र (जिलावार)।

1. अल्मोड़ा जिला

A. लाखुदियर (लाख की गुफा):

- ✓ यह गुफा अल्मोड़ा से 20 किमी दूर, अल्मोड़ा-जगेश्वर मार्ग पर, सुयल नदी के पास स्थित है। इसे 1968 में डॉ. एम. पी. जोशी ने खोजा था।
- ✓ विशेषताएँ:
  - ▪ विभिन्न गतिविधियों में मानव आकृतियाँ, जैसे नृत्य (समूह नृत्य)।
  - ▪ जानवरों की आकृतियाँ और ज्यामितीय आकार।
  - ▪ काले, लाल और पीले रंगों से चित्रित।
  - ▪ लहराती रेखाएँ, आयताकार ज्यामितीय डिज़ाइन और बिंदुओं के समूह देखे जाते हैं।

B. ल्वेथाप

- ✓ चित्रण: शैलाश्रयों की दीवारों पर शिकार और नृत्य के दृश्य दर्शाए गए हैं।

C. पेट शाला

- ✓ चित्रण: इस स्थल पर नृत्य करती हुई आकृतियाँ पाई जाती हैं।

D. फल सीमा

- ✓ विशेषताएँ: फल सीमा के चित्रों की एक अनोखी विशेषता यह है कि इन्हें आग से काला कर दिया जाता था और बाद के निवासियों द्वारा जलाया गया।
- ✓ चित्रण: नृत्य और ध्यान करती हुई आकृतियां।

2. चमोली जिला

A. गोरख्या उडियार

- ✓ स्थान: अलकनंदा नदी के पास, डूंगरी गांव में स्थित।
- ✓ यह गुफा पाषाण युग (पैलियोलिथिक) से मानी जाती है।
- ✓ विशेषताएँ:
  - ✓ पीली चट्टान की पृष्ठभूमि पर लाल और केसरिया रंग की चित्रकला।
  - ✓ मानव और पशु आकृतियाँ, जिनमें त्रिशूल के आकार वाले मानव भी शामिल हैं।

B. किमनी

- ✓ स्थान: किमनी गांव में कर्णप्रयाग-ग्वालदम रोड के किनारे।
- ✓ विशेषताएं: इस स्थल से औजारों और जानवरों की हल्की सफेद रंग की आकृतियाँ पाई जाती हैं।

C. मलारी

- ✓ स्थान: तिब्बत के पास स्थित
- ✓ खोजें:
  - मानव कंकाल, मटके, और पशु हड्डियां।
  - 5.2 किलोग्राम सोने का मुकुट (जो 2000 ईसा पूर्व से 600 ईसा पूर्व के बीच का माना जाता है)।

3. उत्तरकाशी जिला

A. हुडली

- ✓ विशेषताएँ: नीले रंग की चट्टान चित्रकला।

4. पिथौरागढ़ जिला

A. बांकोट

- ✓ विशेषताएँ: आठ तांबे की मानव आकृतियाँ।
- ✓ उत्तराखंड में की गई पुरातात्विक और मानव वैज्ञानिक खोजें इस क्षेत्र में प्राचीन मानव जीवन का जीवंत चित्र प्रस्तुत करती हैं, जो निचले पाषाण युग से लेकर नवपाषाण युग और उससे आगे तक फैली हुई हैं। ये खोजें इस क्षेत्र के ऐतिहासिक महत्व को रेखांकित करती हैं और इसके प्राचीन निवासियों के जीवन और संस्कृति के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती हैं।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

3 CHAPTER उत्तराखंड का आद्य ऐतिहासिक काल

प्रागैतिहासिक और ऐतिहासिक काल के बीच का संक्रमण काल, जिसे प्रारंभिक ऐतिहासिक काल / आद्य ऐतिहासिक काल कहा जाता है, इस काल में, उत्तराखंड के महत्वपूर्ण पुरातात्विक साक्ष्यों का अभाव है। यह काल मुख्य रूप से विभिन्न धार्मिक महाकाव्यों में दर्ज है, इसलिए इसे महाकाव्य युग कहा जाता है। उत्तराखंड का प्रारंभिक इतिहास वेदों, रामायण, महाभारत और पुराणों जैसे ग्रंथों में मिलते संदर्भों के माध्यम से पुनर्निर्मित किया जाता है।

जानकारी के स्रोत :

1. उत्तराखंड के प्रारंभिक ऐतिहासिक काल के बारे में जानकारी के मुख्य स्रोत धार्मिक ग्रंथ हैं, जैसे पुराणों के ग्रंथ।
2. ऋग्वेद में इस क्षेत्र का सबसे पहले उल्लेख किया गया है, जिसमें इसे देवभूमि (देवों की भूमि) और मनीषियों की पूर्ण भूमि (साधुओं की पूर्ण भूमि) के रूप में संदर्भित किया गया है।
3. ऐतरेय ब्राह्मण में उत्तर कुरु शब्द का प्रयोग उत्तराखंड के लिए किया गया है।
4. कौषीतकी ब्राह्मण में बद्रिकाश्रम का उल्लेख किया गया है, जिसे वाकदेवी (वाणी की देवी) का निवास स्थान माना गया है।
5. स्कंद पुराण में हिमालय क्षेत्र को पांच भागों में बांटा गया है: नेपाल, केदारखंड, मनस्कंड, कश्मीर, और जलंधारा
   - ✓ केदारखंड में गढ़वाल शामिल है, जबकि मानसखंड में कुमाऊं शामिल है
   - ✓ केदारखंड और मनस्कंड के मिलाकर बने क्षेत्र को ब्रह्मापुर, खासदेश, या उत्तराखंड कहा जाता है।
6. बौद्ध साहित्य में पाली भाषा में उत्तराखंड को हिमवंत कहा गया है।

प्राचीन उत्तराखंड के प्रमुख क्षेत्र:

A. गढ़वाल क्षेत्र

1. प्राचीन नाम और सीमाएं
   - ✓ प्राचीन समय में गढ़वाल को बद्रिकाश्रम, तपोभूमि, और केदारखंड के नाम से जाना जाता था।
   - ✓ केदारखंड को 50 योजन लंबा और 30 योजन चौड़ा बताया गया है।
   - ✓ केदारखंड और मनस्कंड की सीमाएँ बदहन क्षेत्र या नंदा देवी पर्वत द्वारा बांटी गई थीं।
     - केदारखंड गंगाद्वार से हिमालय तक और ताम्सा (टोंस) नदी से बुद्दांचल या नंदा देवी तक फैला हुआ था।
   - ✓ लगभग 1515 ई. में अजय पाल ने 52 किलो का एकीकरण किया, और इस क्षेत्र को गढ़वा के नाम से जाना जाने लगा।
2. वैदिक और पौराणिक संदर्भ
   - ✓ ऋग्वेद के अनुसार, असुर राजा शम्बर के इस क्षेत्र में 100 किले थे, जिन्हें इंद्र और सुदास ने नष्ट कर दिया था।
   - ✓ अलकापुरी, जो कुबेर की राजधानी है, गढ़वाल में स्थित है, और मनु, जो मानवता के पूर्वज थे, यहां रहते थे।
   - ✓ बद्रीनाथ के पास, गणेश, नारद, मचुकुंद, व्यास और स्कंद जैसी गुफाओं को वैदिक रचनाओं के स्थल के रूप में माना जाता है।

3. धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व

- ✓ टिहरी गढ़वाल में, हिमालय के विशाल पर्वत पर वशिष्ठ गुफा और वशिष्ठ कुंड स्थित हैं।
- ✓ देवप्रयाग में रघुनाथ मंदिर है, जहां भगवान राम के बारे में माना जाता है कि उन्होंने ध्यान किया था, और लक्ष्मण ने टिहरी के तपोवन में ध्यान किया था।
- ✓ रामायण काल में, बनासुर ने इस क्षेत्र पर शासन किया था और उसकी राजधानी ज्योतिषपुर (आधुनिक जोशीमठ) थी।
- ✓ महाभारत के वनपर्व में, केदारनाथ को भृंगतंग कहा गया है, और इस क्षेत्र पर पुलिंद और किरात कबीलों का प्रभुत्व था।
- ✓ पुलिंद राजा सुबाहु, जिनकी राजधानी श्रीनगर थी, महाभारत युद्ध में पांडवों के लिए लड़े थे।
- ✓ राजा विराट, जिनकी राजधानी विराटगढ़ (आधुनिक जौनसार) थी, ने अपनी बेटी उत्तरा का विवाह अभिमन्यु से किया था।

4. अध्ययन के केंद्र

- ✓ बद्रिकाश्रम और कण्वाश्रम इस क्षेत्र के प्रमुख अध्ययन केंद्र थे।
- ✓ खसों के शासनकाल में गढ़वाल में बौद्ध धर्म का प्रचार हुआ।
- ✓ महाभारत में देवप्रयाग को तीर्थ यात्रा का सर्वोत्तम स्थान बताया गया है, जो सभी पापों को नष्ट करने की क्षमता रखता है।
- ✓ महाभारत में श्रीनगर को सुबाहुपुर और श्रीखेत कहा गया है।

कण्वाश्रम के बारे में

- ✓ कण्वाश्रम, जो पौड़ी जिले में मालिनी नदी के किनारे स्थित है, राजा दुष्यंत और शकुंतला की प्रेम कहानी के लिए प्रसिद्ध है।
- ✓ यहीं पर सम्राट भरत का जन्म हुआ था।
- ✓ महान कवि कालिदास ने यहीं पर "अभिज्ञान शाकुंतलम" की रचना की थी।
- ✓ आजकल, इस स्थल को चौकीघाट के नाम से जाना जाता है, जहां बसंत पंचमी के दिन मेला लगता है।

B. <u>कुमाऊं क्षेत्र</u>

1. पौराणिक उत्पत्ति

- ✓ पौराणिक कथाओं के अनुसार, चम्पावत में स्थित कांटेश्वर पर्वत भगवान विष्णु के कूर्म (कछुआ) अवतार का स्थल था, जिससे इस क्षेत्र को कूर्माचल नाम मिला, जो बाद में कुमाऊं में बदल गया।
- ✓ इस क्षेत्र का प्राचीन नाम मनस्कंड या कूर्माचल था।

2. जनजातीय उपस्थिति और मंदिर

- ✓ वायु पुराण में कुमाऊं में किरात, गांधर्व, किन्नर, यक्ष और नाग जैसी जनजातियों का उल्लेख है।
- ✓ अल्मोड़ा में जाख मंदिर और बिनागा, कालिंगा, पिंगला और वासुकी नाग जैसे नाग मंदिर यह प्रमाणित करते हैं कि इस क्षेत्र में नागों की उपस्थिति थी।
- ✓ सबसे प्रमुख नाग मंदिर, बिनागा या बेरीनाग, पिथौरागढ़ में स्थित है।

3. धार्मिक महत्व

- ✓ मनस्कंड में, जागेश्वर धाम को वह स्थान माना जाता है जहां भगवान शिव ने ध्यान किया था, और कार्तिकेय का जन्म हुआ था।
- ✓ महाभारत के अनुसार, महर्षि धौम्य ने सम्राट युधिष्ठिर को इस क्षेत्र के तीर्थ स्थानों के बारे में बताया था।

4 CHAPTER उत्तराखंड के प्राचीन राजवंश

1000 ईसा पूर्व (कुणिंदों की प्रारंभिक स्थापना) से लेकर 8 वीं शताब्दी ईस्वी (कत्युरी वंश की स्थापना) तक का काल उत्तराखंड के इतिहास का प्राचीन काल कहा जा सकता है।

1. कुणिंद राजवंश

a. ऐतिहासिक महत्व :

- ✓ कुणिंद उत्तराखंड के सबसे प्राचीन शासक थे, और उनका उल्लेख भारतीय महाकाव्य, महाभारत में किया गया है, विशेष रूप से सभा पर्व, अरण्य पर्व और भीष्म पर्व में।
- ✓ सुबाहु, जो कुणिंदों के महानतम राजाओं में से एक थे, वर्तमान श्रीनगर से जुड़े थे। उनकी राजधानी कालकूट थी।
- ✓ वे 4 वीं शताब्दी ईस्वी तक उत्तराखंड पर शासन करते रहे। हमें कुणिंदों का उल्लेख अशोक के कालसी अभिलेख में मिलता है, जहाँ इस क्षेत्र के निवासियों को 'पुल्लिंद' कहा गया है, और क्षेत्र को 'अपारंत' नाम से जाना गया था।
- ✓ विदेशी यात्री टॉलेमी ने भी कुणिंदों का उल्लेख किया है और उन्हें कुणिंदस्य कहा है।

b. ऐतिहासिक साक्ष्य के रूप में कुणिंद के सिक्के :

- ✓ कुणिंदों के सिक्के (300 ईसा पूर्व-200 ईसा पूर्व) महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत हैं और इन्हें निम्न में वर्गीकृत किया गया है:

(i) अमोघभूति प्रकार: ये सिक्के तांबे और चांदी से बने थे, जिन पर ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपि में शिलालेख अंकित थे इन सिक्कों पर अक्सर देवी-देवताओं और हिरणों की छवियाँ चित्रित होती थीं। सिक्कों पर ब्राह्मी लिपि में "राजा कुंडिदस्य अमोघभूति महाराजास" लिखा हुआ है।

> अमोघभूति इस वंश के सबसे शक्तिशाली राजा थे। उन्होंने 1वीं शताब्दी ईसा पूर्व तक शासन किया। उनकी मृत्यु के बाद, कुणिंदों के अधीन मैदान क्षेत्र पर शक शासकों का अधिकार हो गया। कुमाऊं में 'शक संवत' के अस्तित्व और अनेक सूर्य मन्दिरों से यह सिद्ध होता है कटारमल (अल्मोड़ा) सर्वाधिक प्रसिद्ध है।

(ii) अल्मोड़ा प्रकार: विशेष रूप से कत्यूर घाटी, अल्मोड़ा में पाया जाता है।

(iii) छत्रेश्वर प्रकार: देवता छत्रेश्वर/छत्रेश्वर को समर्पित।

c. प्रशासनिक प्रभाग:

- ✓ कुणिंद राज्य को छह भागों में विभाजित किया गया था: तमस, कुलकुट, तंगन, भारद्वाज, रंककुम, और अमेय (गोविषाण)।
- ✓ कालकूट (कलसी) उनकी प्रारंभिक राजधानी थी।

d. अन्य राजवंशों के साथ संबंध:

- ✓ कुणिंदों का शासन शुंग (187–75 ईसा पूर्व) और कुषाण (1वीं–3 वीं शताब्दी ईस्वी) काल के साथ समकालीन था।

e. कुषाण प्रभाव: कुषाणों ने तराई और शिवालिक के कुछ हिस्सों पर शासन किया, इसे वीरभद्र (ऋषिकेश), मोरध्वज (कोटद्वार), और गोविषाण (काशीपुर) में सिक्कों की खोज से प्रमाणित किया जा सकता है।

इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि उत्तराखंड के कुछ हिस्सों में कुणिंदों के शासन के साथ-साथ कई अन्य वंशों का भी समानांतर शासन था।

2. मौर्य साम्राज्य, (324 ई.पू. - 187 ईसा पूर्व)

- ✓ अशोक का प्रभाव:
  - कलसी शिलालेख उत्तराखंड में मौर्य साम्राज्य के प्रभाव को दर्शाता है, जो देहरादून और तराई क्षेत्रों के कुछ हिस्सों को शामिल करता है।
  - इस शिलालेख में इस क्षेत्र के निवासियों को 'पुल्लिंद' और क्षेत्र को 'अपारंत' कहा गया है।
  - इस काल के दौरान उत्तराखंड में बौद्ध धर्म का प्रचार हुआ।
  - मौर्य साम्राज्य द्वारा मैदान क्षेत्रों पर नियंत्रण के बावजूद, कुंदिनों ने पहाड़ी क्षेत्रों पर शासन करना जारी रखा।

3. शक वंश (दूसरी शताब्दी ई.पू)

- ✓ कुमाऊं क्षेत्र में, शक काल की प्रथाएं, सूर्य के मूर्तियां और मंदिर इस क्षेत्र में शक जातियों की उपस्थिति को दर्शाती हैं।
- ✓ अल्मोड़ा में कोसी के पास स्थित कटारमल सूर्य मंदिर बहुत प्रसिद्ध माना जाता है ओडिशा के कोणार्क सूर्य मंदिर के बाद दूसरा सबसे महत्वपूर्ण सूर्य मंदिर।

4. कुषाण राजवंश (पहली ई. - चौथी ई.)

- ✓ शक वंश के बाद, कुषाण शासकों ने उत्तराखंड के तराई क्षेत्र पर शासन किया।
- ✓ कुषाण काल के अवशेष वीरभद्र (ऋषिकेश), मोरध्वज (कोटद्वार) और गोविषाण (काशीपुर) क्षेत्रों से पाए गए हैं।
- ✓ कुषाणों के बाद, इस क्षेत्र में कई वंशों की स्थापना हुई, जैसे गोविषाण (काशीपुर), कलसी और लाखमंडल, और कुछ क्षेत्रों पर कुणिंदों का शासन था।

5. उत्तर-कुषाण काल

- ✓ यौधेय राजवंश (3-4 वीं शताब्दी ई.):
  - ये कुषाणों के समकालीन थे।
  - जिन क्षेत्रों पर उनका नियंत्रण था, उनमें कांगड़ा, शिमला, जौनसार-बावर (देहरादून), काला डांडा (पौड़ी गढ़वाल), और सहारनपुर शामिल थे।
  - उनके सिक्के जौनसार-भाबर (देहरादून), कालन-डांडा (पौड़ी गढ़वाल) में पाए गए हैं।
  - यौधेय राजा शीलवर्मन ने अश्वमेध यज्ञ किया और विकासनगर (देहरादून) में 'बदावाला यज्ञ वेदिका' (अग्नि वेदी) का निर्माण किया।
  - पूर्व कुणिंद शासक, जब तराई और भावर क्षेत्र कुषाण और यौधेय नियंत्रण में आ गए, तब भी पहाड़ी क्षेत्रों में शासन करते रहे।

6. गुप्त काल और कार्तिपुर साम्राज्य

- ✓ कार्तिपुर साम्राज्य –
  - इस साम्राज्य की स्थापना संभवतः कुणिंदों ने की थी, जिसमें गोविषाण , कलसी, रियासतें थीं। और गुप्त पतन के दौरान लाखमंडल का उदय हुआ
- ✓ सीमित साक्ष्य:
  - इस वंश के बारे में जानकारी मुख्य रूप से समुद्रगुप्त के इलाहाबाद शिला अभिलेख (जो हरिसेना द्वारा लिखा गया था) और लाखमंडल के टूटी हुई शिला अभिलेख से प्राप्त की जा सकती है। लाखमंडल शिला अभिलेख के अनुसार, इसके आसपास का क्षेत्र गुप्त साम्राज्य का हिस्सा था।
  - इलाहाबाद अभिलेख में उल्लेख है कि कर्त्रिपुर राज्य गुप्त साम्राज्य की उत्तरी सीमा पर स्थित था और वह गुप्तों के अधीन था।
  - इस क्षेत्र को कर्त्रिपुर के रूप में पहचाना जाता है, जिसमें कुमाऊं, गढ़वाल और रोहिलखंड शामिल हैं।

7. गुप्तोत्तर राजवंश

- ✓ यादव राजवंश (5वीं-7वीं शताब्दी ई.):
  - राजधानी: सिंहपुर।
  - लाखमंडल अभिलेख में गुप्त काल से लेकर हर्षवर्धन के काल तक 11 शासकों का उल्लेख किया गया है, जिनमें सेन वर्मा सबसे महत्वपूर्ण राजा थे।

- लाखमंडल अभिलेख राजकुमारी ईश्वर से जुड़ा हुआ है (उनके पिता: भास्कर वर्मन; उनके पति: चंद्रगुप्त)।
- यह अभिलेख यह प्रमाणित करता है कि यादवों का उत्तराखंड के कुछ हिस्सों, विशेष रूप से यमुना नदी के पास पर शासन था।

✓ नाग राजवंश (छठी-सातवीं शताब्दी ई.):
- मुख्य शासक: स्कंदनाग, विभुनाग, अंशुबनाग, और गणपतिनाग, जो गोपेश्वर, गढ़वाल में त्रिशूल अभिलेख में पाए गए।
- गणपतिनाग को सबसे शक्तिशाली शासक माना जाता था।
- नाग शासकों ने कर्त्रिपुर राज्य को हराया और उत्तराखंड के कुछ हिस्सों पर अपना शासन स्थापित किया।
- वे 600 ईस्वी के बाद मौर्य शासकों द्वारा पराजित हो गए।

✓ मौखरी राजवंश (7वीं शताब्दी ई.):
- नाग वंश को उखाड़ फेंक इस क्षेत्र पर कन्नौज से शासन फैलाया। उनकी राजधानी कान्यकुब्ज थी, जिसे अब कन्नौज के नाम से जाना जाता है।
- उनके पहले राजा हरिवर्मा थे और अंतिम राजा ग्रहवर्मा थे, जिसे हर्षवर्धन ने मार डाला।

8. हर्ष काल (648–750 ई.)

✓ हर्षचरित (बाणभट्ट द्वारा लिखित) में उत्तराखंड का उल्लेख है और इस क्षेत्र के यात्रियों के बारे में जानकारी दी गई है।

✓ राजनीतिक नियंत्रण: मौखरि वंश के पतन के बाद थानेश्वर के हर्षवर्धन ने इस क्षेत्र पर कब्जा कर लिया। उनके समय में गढ़वाल और कुमाऊं के क्षेत्रों को 'ब्रह्मपुर' कहा जाता था।

✓ चीनी ग्रंथ:
- ह्वेन-त्सांग ने सुवर्ण गोत्र नामक एक राज्य का उल्लेख किया है, जिस पर महिलाओं का शासन था (जिसे स्त्री-राज्य कहा जाता है)।
- अपनी यात्रा वृत्तांत *सी-यु-की* में, ह्वेन त्सांग ने उत्तराखंड के कई स्थानों का उल्लेख किया और उन्हें निम्नलिखित नामों से संदर्भित किया-
  - ☞ हरिद्वार को "मो-यो-लो" के रूप में संदर्भित किया
  - ☞ काशीपुर (गोविष्णा) को "की-यू-पी-स्वांग-ना" के रूप में संदर्भित किया।
  - ☞ ब्राह्मपुर को "पो-लो-की-मो-पो-लो" के रूप में संदर्भित किया।
  - ☞ स्वर्ण गोत्र राज्य को "सो-फा-ला-ना-की-लो" के रूप में संदर्भित किया।

9. <u>हर्षोत्तर काल (750 ई.)</u>

✓ 7वीं से 8वीं शताब्दी के दौरान उत्तराखंड क्षेत्र में एक बहु-वंशीय अराजकता का वातावरण था। इस अवधि में कई राज्यों का उदय हुआ, जिन्होंने इस क्षेत्र के विभिन्न हिस्सों पर शासन किया, जैसे कि ब्राह्मपुर, शत्रुघ्न, गोविष्ण (पौरवों द्वारा शासित) आदि।

✓ शत्रुघ्न राज्य:
- सीमाएँ: गंगा (पूरब में), हिमालय (उत्तर में), यमुना (केंद्र में बहती हुई)

✓ पौरव वंश:

ह्वेन त्सांग के अनुसार, यह राजवंश ब्रह्मपुर जिले में अस्तित्व में था, जो पश्चिम में गंगा से लेकर पूर्व में करनाली तक फैला था, और उत्तर में सुवर्णगोत्र से घिरा था।

(i) पौरव वंश का प्रशासन-

प्रशासनिक संरचना पर गुप्त और हर्ष काल की प्रणालियों का महत्वपूर्ण प्रभाव था। शासन केंद्रीकृत था, जिसमें सभी शक्तियाँ राजा के हाथों में एकत्रित थीं, जिन्हें एक क्रमबद्ध प्रशासनिक ढांचे द्वारा सहायता प्राप्त थी।

- ✓ सर्वोच्च प्राधिकारी: राजा
  - राजा के पास विधायी, कार्यकारी और न्यायिक शक्तियाँ थीं, जिससे वह शासन में सर्वोच्च अधिकार रखते थे।
  - वह अत्याचारी नहीं थे; बल्कि, उन्होंने स्वयं को "गायों और ब्राह्मणों का संरक्षक" कहा, जो उनके दयालु और धर्म का पालन करने को दर्शाता है।
  - प्रशासनिक कार्यों को संभालने के लिए, राजा एक मंत्रिपरिषद पर निर्भर था, जिसमें हर मंत्री किसी विशेष क्षेत्र का प्रबंधन करता था।
- ✓ प्रमुख प्रशासनिक पद
  1. कुमार अमात्य: उत्तराधिकारी या युवराज।
  2. अमात्य: सर्वोच्च प्रशासनिक अधिकारी जो सभी महत्वपूर्ण कार्यों की देखरेख करता था।
  3. बालाध्यक्ष: सेना का प्रमुख, जो सैन्य बलों पर सर्वोच्च नियंत्रण रखता था।
  4. सेना को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया गया था:
     i. घुड़सवार सेना (अश्वपति के अधीन)
     ii. हाथी सेना (गजपति के अधीन)
     iii. पैदल सेना (जयपति के अधीन)
  5. कोटाधिकारी: राजमहल (राजप्रसाद) के देखरेख और प्रबंधन का अधिकारी।
  6. प्रतिहार: राजा और राजपरिवार की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार अधिकारी।
  7. सुपकर्पति: शाही रसोई का प्रभारी अधिकारी।
  8. दंडपाशिक: पुलिस का सर्वोच्च अधिकारी, जो कानून और व्यवस्था बनाए रखता था।
  9. संधि-विग्रह: युद्ध को टालने और कूटनीति के माध्यम से शांति बनाए रखने के लिए जिम्मेदार अधिकारी।
  10. द्वेवारिक: राजमहल में व्यक्तियों के प्रवेश और निकासी की निगरानी करने वाला अधिकारी।

(ii) राजस्व प्रणाली:

- ✓ भू-राजस्व (भाग)
  - राज्य की मुख्य आय का स्रोत भूमि कर था, जो कृषि उत्पादन का 1/6 हिस्सा होता था।
  - राजस्व संग्रहण की देखरेख भागे नामक अधिकारियों द्वारा की जाती थी।
  - भूमि को निम्नलिखित श्रेणियों में बांटा गया था:
    - ☞ केदार भूमि: सिंचित भूमि।
    - ☞ सरी भूमि: असिंचित भूमि।
- ✓ अतिरिक्त राजस्व स्रोत
  - वन संसाधन, खनिज निष्कर्षण, व्यापार, जिसमें वनस्पति और अन्य सामग्री शामिल हैं।
- ✓ लेखांकन एवं अभिलेख संधारण
  - कायस्थ आय और भूमि खाता का रिकॉर्ड रखते थे।
  - भूमि मापने के लिए द्रोणवापम, खरिवापम, और कुल्यवापम जैसे तरीके अपनाए जाते थे।
- ✓ गोविष्ण राज्य
  - यह तराई क्षेत्र में स्थित था, जो रामगंगा (पश्चिम) से लेकर शारदा (पूर्व) तक फैला हुआ था, और वर्तमान में यह क्षेत्र काशीपुर के नाम से जाना जाता है।
  - प्रसिद्ध चीनी तीर्थयात्री ह्वेन त्सांग ने 7वीं शताब्दी में शहर की यात्रा की थी।

10. कृतिकेयपुर वंश

- ✓ ब्रह्मपुर साम्राज्य के विघटन के बाद कार्तिकेयपुर राजवंश का उदय हुआ, जिसके कारण क्षेत्र में कई छोटी रियासतों का उदय हुआ।
- ✓ लगभग 700 ई. में कुणिंदों के वंशजों ने उत्तर-पश्चिम गढ़वाल में अपनी शक्ति मजबूत की और कार्तिकेयपुर राजवंश की स्थापना की।
- ✓ इस राजवंश की स्थापना 700 ई. में बसंत देव (हर्ष की मृत्यु के बाद) ने की, उन्होंने 'परम भट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर' की उपाधि धारण की।
- ✓ इस वंश की राजधानी :
  - पहले 300 वर्षों तक- कृतिकेयपुर, जो जोशीमठ के दक्षिण में स्थित था।
  - बाद में स्थानांतरित: बैजनाथ, जो कत्यूर घाटी (वर्तमान में बागेश्वर) में स्थित था। कार्तिकेयपुर राजवंश को मध्य हिमालय के पहले ऐतिहासिक साम्राज्य के रूप में मान्यता प्राप्त है।

- ✓ सूचना के स्रोत: कृतिकेयपुर वंश का अध्ययन करने के लिए पाण्डुकेश्वर ताम्र लेख महत्वपूर्ण स्रोत हैं, इसके अलावा बागेश्वर, कंदारा और बैजनाथ में अन्य ताम्र लेख भी मिले हैं।
- ✓ कृतिकेयपुर राज्य के सभी प्रमुख वंशों में से तीन वंशों को सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है।

(i) खरपरदेव: राजा खरपरदेव द्वारा स्थापित।

- ✓ कश्मीरी ऐतिहासिक ग्रंथ कल्हण का राजतरंगिणी में यह उल्लेख मिलता है कि इस अवधि में कश्मीरी शासक ललितादित्य मुक्तपीड ने गढ़वाल क्षेत्र पर आक्रमण किया था।
- ✓ बागेश्वर शिलालेख इस राजवंश के बारे में विवरण प्रदान करता है, जिसमें त्रिभुवन राज को इसका अंतिम शासक बताया गया है।

(ii) निम्बरदेव: निम्बर द्वारा स्थापित, जिसका उल्लेख नालंदा शिलालेख में मिलता है

- ✓ उनके शासनकाल में, गढ़वाल पर धर्मपाल (बंगाल के पाल वंश का शासक) ने आक्रमण किया था।
- ✓ निम्बर ने शैव परंपरा का पालन किया और उसका उत्तराधिकारी उसका पुत्र इश्तगन बना।
- ✓ इश्तगन देव: उन्हें कृतिकेयपुर राज्य को एकजुट करने का श्रेय दिया जाता है। उन्होंने अपनी पत्नी वगा देवी के साथ जागेश्वर में कई मंदिरों का निर्माण किया, जैसे नवदुर्गा, लकुलीश और नटराज।
- ✓ ललितशुर देव: इश्तगन देव के पुत्र, जिन्होंने लगभग 832 ई. में राजा के रूप में शासन करना शुरू किया। उनके 21वें और 22वें शासनकाल के पाण्डुकेश्वर ताम्र लेखों में उल्लेखित किया गया है। उन्हें, उनके भूमि सुधारों के कारण वराह अवतार के रूप में पूजा गया। उनकी दो पत्नियां थीं - लया देवी और सामा देवी। सामा देवी ने बैजनाथ में नारायण मंदिर का निर्माण किया।
- ✓ भूदेव: ललितशुर देव के पुत्र, जिन्होंने बैजनाथ मंदिर का निर्माण किया और बौद्ध धर्म का विरोध किया, जिसके कारण उन्हें बुद्धश्रमण शत्रु (बौद्ध भिक्षुओं के शत्रु) की उपाधि प्राप्त हुई।

(iii) सलोनादित्य राजवंश: इच्छर देव द्वारा स्थापित

- ✓ इच्छर देव की पत्नी सिन्धु देवी थीं। उनके उत्तराधिकारी में देशत देव और पद्म देव शामिल थे।
- ✓ इस वंश के अंतिम शासक सुभिक्षराज देव थे। उन्होंने कृतिकेयपुर क्षेत्र के भीतर सुभिक्षपुर नामक एक नई राजधानी स्थापित की।

नोट: आदि शंकराचार्य ने कार्तिकेयपुर शासन के दौरान उत्तराखंड का दौरा किया था। उनकी यात्रा के दौरान इश्तगन देव शासक थे। शंकराचार्य ने उत्तराखंड में बद्रीनाथ और केदारनाथ मंदिरों का सुधार करवाया। उन्होंने पूरे भारत में 4 मठों की स्थापना की (जिनमें से एक उत्तराखंड में है)

1) ज्योतिर्मठ (बद्रिकाश्रम) - उत्तराखंड
2) श्रृंगेरी मठ - कर्नाटक
3) द्वारका मठ - गुजरात
4) पुरी गोवर्धन मठ - ओडिशा

उनकी मृत्यु 32 वर्ष की आयु में 820 ई. में केदारनाथ में हुई कार्तिकेयपुर राजवंश के पतन के बाद कुमाऊं क्षेत्र में कत्यूरी राजवंश का उदय हुआ। वे कार्तिकेयपुर राजवंश के वंशज माने जाते थे और कत्यूर घाटी (अल्मोड़ा) में बैजनाथ से शासन करते थे।

5 CHAPTER गढ़वाल में परमार (पंवार) या शाह राजवंश का शासन

कत्यूरी राजवंश के पतन के बाद उत्तराखंड में अनेक रियासतों का उदय हुआ। उनमें से, कुमाऊं में चंद और गढ़वाल में पंवार/परमार प्रमुखता से उभरे।

A. परमार शासन के इतिहास के स्रोत

- ✓ परमार शासकों के वंश का वर्णन विभिन्न विद्वानों ने किया है, जैसे कि ब्रैकेट, विलियम्स, हार्डविक, मोरलाम, एटकिन्स आदि।
- ✓ **समकालीन साहित्यिक स्रोत:**
- ✓ परमार शासकों के दरबारी कवियों और लेखकों द्वारा रचित काव्य रचनाएँ, जैसे मानोदय काव्य, गढ़ राजवंश आदि।
- ✓ इस्लामी ग्रंथ, जैसे तुज़ुक-ए-जहांगीरी, मासिर-उल-उमरा, शाहजहाँ नामा आदि।
- ✓ ब्रिटिश ग्रंथ और प्रशासनिक अभिलेख।
- ✓ **परमार शासकों के शिलालेख** श्रीनगर, देवप्रयाग आदि स्थानों पर पाए जाते हैं।

B. परमार वंश के महत्वपूर्ण शासक (7वीं शताब्दी ई. से 1949 ई.)

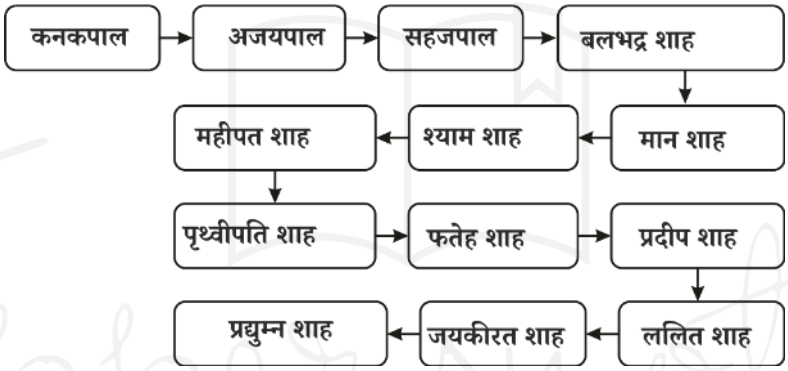

- ➢ **कनकपाल (688 ई.)**
  - ✓ कनकपाल ने 688 ई. में चंद्रपुर किले (गढ़) में परमार (पंवार) वंश की स्थापना की, जो गढ़वाल के 52 किलों में से एक था।
  - ✓ प्रारंभ में यह वंश कार्तिकेयपुर शासकों के अधीन एक जागीरदार के रूप में सेवा करता था।
  - ✓ इस वंश ने 10वीं-11वीं शताब्दी के आस-पास एक स्वतंत्र शासक के रूप में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया।
  - ✓ अगले कई शासकों के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं मिलती, जब तक अजयपाल का शासन नहीं आया।
- ➢ **अजयपाल:** गढ़वाल राज्य के वास्तुकार
  - ✓ वह परमार वंश के 37वें राजा थे, जिन्होंने 1517 ई. में चंद्रपुरगढ़ से राजधानी को देवलगढ़ और बाद में श्रीनगर स्थानांतरित किया।
  - ✓ **प्रमुख उपलब्धियां:** उन्होंने 48 किलो को जीता और उन्हें अपने साम्राज्य में एकजुट किया, और इस क्षेत्र का नाम "गढ़वाल" रखा।
  - ✓ **प्रशासनिक सुधार:** उन्होंने राज्य को पट्टी और परगना में विभाजित किया और माप इकाई के रूप में पाठा (~2 किग्रा) की शुरुआत की।
  - ✓ **निर्माण कार्य:** उन्होंने श्रीनगर में एक मजबूत किला, भैरव मंदिर और राजराजेश्वरी यंत्र का निर्माण किया, साथ ही देवलगढ़ में एक किला और राजराजेश्वरी मंदिर भी बनवाए।
  - ✓ **कुमाऊं के साथ संबंध:** शुरुआत में गढ़वाल का कुछ हिस्सा कुमाऊं के राजा कर्तिचंद से हार गए थे, लेकिन एक संधि के द्वारा उन क्षेत्रों को पुनः प्राप्त किया और कुमाऊं को कर देने का समझौता किया।
  - ✓ **धार्मिक महत्व:** वह गुरु गोरखनाथ के भक्त और गुरु पंथ के अनुयायी थे, और धार्मिक सहिष्णुता और अच्छे शासक के रूप में प्रसिद्ध थे, जिन्हें "उत्तराखंड के अशोक" के नाम से जाना जाता था।

- **सहजपाल (1548-1575 ई.)**
  - ✓ वह अकबर के समकालीन थे और इस वंश के 42वें शासक थे।
- **बलभद्र शाह (1575-1561 ई.)**
  - ✓ वह पहले शासक थे जिन्होंने 'शाह' की उपाधि अपनाई, जो दिल्ली सल्तनत के शासक बहलोल लोदी द्वारा उन्हें दी गई थी
  - ✓ इनके शासनकाल में चंद राजा रुद्रचंद ने गढ़वाल पर आक्रमण किया, जिसे उन्होंने कत्यूरी शासक सुखलादेव के साथ गठबंधन करके पराजित किया।
- **मान शाह (1561-1611 ई.)**
  - ✓ उन्होंने कुमाऊं के राजा लक्ष्मीचंद के सात आक्रमणों को सफलतापूर्वक नाकाम किया।
  - ✓ उन्होंने चंदों की राजधानी अल्मोड़ा पर विजय प्राप्त की और तिब्बत तथा दापा के शासक से युद्धों में विजय प्राप्त की।
- **श्याम शाह (1611-1631 ई.)**
  - ✓ इनका नाम जहाँगीरनामा में उल्लेखित है।
  - ✓ इन्होंने कुमाऊं में चंद शासक त्रिमलचंद को सिंहासन पर बैठाने में समर्थन किया।
  - ✓ श्याम शाह को पँवार वंश का विलासी राजा बताया जाता है।
- **महीपत शाह (1631-1635 ई.)**
  - ✓ वह श्याम शाह के चाचा थे और उनके निधन के बाद सिंहासन पर बैठे।
  - ✓ उन्होंने तिब्बत के खिलाफ 3 सफल अभियानों का नेतृत्व किया, जहाँ उनके प्रमुख सेनापतियों, माधो सिंह भंडारी और लोधी रिखोला ने अद्वितीय वीरता का प्रदर्शन किया।
  - ✓ वह कुमाऊं के शासकों से युद्ध में शहीद हो गए।
- **पृथ्वीपति शाह (1640-1664 ई.)**
  - ✓ रानी कर्णावती का संरक्षण काल
    - ▪ पृथ्वीपति शाह 7 साल की उम्र में सिंहासन पर बैठे, और रानी कर्णावती ने उनके संरक्षक के रूप में शासन किया।
    - ▪ मुगलों के खिलाफ विजय (1636): मुग़ल सम्राट शाहजहाँ ने गढ़वाल पर आक्रमण करने के लिए नजाबत ख़ान को भेजा।
    - ▪ रानी कर्णावती ने गढ़वाल सेना का नेतृत्व किया, मुगलों को हराया और प्रतीकात्मक रूप से उनके सैनिकों की नाक काट दी, जिससे उन्हें 'नक कटी रानी' की उपाधि मिली। परिणामस्वरूप, नज़ाबत खान को अपनी मनसबदारी खोनी पड़ी।
    - ▪ उपलब्धियाँ: उन्होंने तिब्बत, कुमाऊं, सिरमौर और वनसारे जैसे पड़ोसी राज्यों के साथ अच्छे संबंध बनाए, देहरादून पर नियंत्रण स्थापित किया, तालाबों और नहरों का निर्माण किया, और कर्णपुर (वर्तमान देहरादून) की स्थापना की।
    - ▪ उन्होंने मावलस्यु महादेव मंदिर का पुनर्निर्माण किया और उनके योगदानों के लिए उन्हें गोंडवाना की रानी दुर्गावती के समान माना जाता है।

पृथ्वीपति शाह का शासनकाल

- ✓ शाहजहाँ के साथ संघर्ष:
  - ▪ शाहजहाँ ने सिरमौर के राजा मांधाता प्रकाश के साथ मिलकर गढ़वाल पर आक्रमण किया, जिसके कारण अस्थायी रूप से भाबर और देहरादून गढ़वाल से छिन गए।
- ✓ दारा शिकोह और औरंगजेब के साथ संबंध:
  - ▪ पृथ्वीपति शाह ने सुलेमान शिकोह (दारा शिकोह के पुत्र) को औरंगजेब की इच्छा के खिलाफ शरण दी, जिससे दिल्ली के साथ तनाव बढ़ गया
  - ▪ उनके बेटे, मेदनी शाह ने सुलेमान शिकोह को धोखा दिया और उसे औरंगजेब के हवाले कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप सुलेमान शिकोह को गढ़वाल से निष्कासित कर दिया गया।
  - ▪ मेदनी शाह की मृत्यु के बाद, पृथ्वीपति शाह ने देहरादून को पुनः प्राप्त किया और एक मजबूत किले के साथ पृथ्वीपुर की स्थापना की।

- **फतेह शाह (1684-1716 ई.)**
  - ✓ फ़तेह शाह का दरबार नौ रत्नों से सुशोभित था, जिनमें कवि, विद्वान और चित्रकार शामिल थे-
    - ▪ सुरेशानंद बड़थ्वाल, खेतराम धस्माना, रुद्रदत्त कामोठी, हरिदत्त नौटियाल, बासवानंद बहुगुणा, शशिधर डंगवाल, सहदेव चंदोला, कवि रामचन्द्र कड़ियाल, चित्रकार केहरदास और श्यामदास।
  - ✓ उसने सिरमौर को पराजित कर वैराटगढ़ और कालसी गढ़ पर कब्जा कर लिया। और अपनी मुद्रा भी जारी की
  - ✓ कुमाऊं के राजा उद्योत चंद से युद्ध में पराजित होने के बाद, उन्होंने श्रीनगर जैसे क्षेत्रों को फिर से प्राप्त किया।

- ✓ उन्होंने सिख गुरुओं से संबंध स्थापित किए और गुरु राम राय को 3 गांव (खुर्बुरा, राजपुर, और चमस्तारी) दिए, जिसके कारण डेरा डून (देहरादून) की नींव पड़ी।
  - गुरु राम राय ने उनके निमंत्रण पर देहरादून में एक गुरुद्वारा स्थापित किया।

➢ **रानी राज – प्रदीप शाह के तहत (1716-1772 ई.)**

- ✓ उपेंद्र शाह के बाद फतेह शाह का उत्तराधिकारी प्रदीप शाह बने, जो नाबालिग थे। उनकी नाबालिग अवस्था के दौरान उनकी माँ ने शासन किया, जिसे "रानी राज" के रूप में जाना जाता है।
- ✓ इस समय को राजपूतों और खसियाओं (खस ठाकुरों और ब्राह्मणों) के दरबारी समूहों के बीच संघर्षों के रूप में चिह्नित किया जाता है।
- ✓ प्रदीप शाह के शासनकाल में पुरिया नैथानी का उल्लेख किया जाता है, जिन्हें "गढ़वाल के चाणक्य" के रूप में जाना जाता है।
- ✓ प्रदीप शाह का काल कुमाऊं और गढ़वाल के बीच एक संघर्ष विराम का काल था, और संबंधों में सुधार हुआ।

➢ **ललित शाह (1772-1780 ई.)**

- ✓ इसने रुहेलों, सिखों, गुर्जरों और राजपूतों के साथ संबंध बनाए रखने के लिए उन्हें जागीरें दीं।
- ✓ हर्षदेव जोशी (कुमाऊं के दीप चंद के अधीन मंत्री) के निमंत्रण पर, ललित शाह ने कुमाऊं (उस समय मोहन चंद द्वारा शासित) पर हमला किया और जीत हासिल की।
- ✓ 1779 में ललित शाह ने सिरमौर राज्य पर आक्रमण करके वैराटगढ़ पर कब्जा किया। हर्षदेव जोशी की सहायता से उन्होंने अपने पुत्र प्रद्यमन शाह को कुमाऊँ का राजा नियुक्त किया, जिन्होंने 1779 से 1786 तक कुमाऊँ पर शासन किया।
- ✓ 1786 में मोहन चंद ने कुमाऊं को पुनः अपने नियंत्रण में ले लिया।

➢ **जयकीरत शाह (1780-1784 ई.)**

- ✓ चुनौतियों का सामना:
  - दरबार के विभिन्न गुटों के बीच आंतरिक मतभेद, जिसमें खंडूरी, डोभाल, नेगी और दून के फौजदार घमंड सिंह शामिल थे।
  - प्रद्यमान चंद (प्रद्यमान शाह) के अधीन सिखों, रुहेलों और कुमाऊं सेनाओं से बाहरी खतरे।

➢ **प्रद्यमान/ प्रद्युम्न शाह (1785-1804 ई.)**

- ✓ प्रारंभ में कुमाऊं (1779–1786) पर प्रद्युम्न चंद के रूप में शासन किया। अपने शासनकाल के दौरान उन्होंने कुमाऊं के गवर्नर के रूप में हर्षदेव जोशी को नियुक्त किया।
- ✓ जयकीरत शाह की मृत्यु के बाद गढ़वाल लौटे और गढ़वाल का सिंहासन संभाला।
- ✓ उनके शासनकाल में गढ़वाल में प्राकृतिक आपदाएं आईं, जैसे कि 1803 में आया भूकंप, जिसमें भारी जान-माल का नुकसान हुआ। साथ ही 1794 और 1795 में आई अकालों ने व्यापक कष्ट पैदा किया।
- ✓ 14 मई 1804 को, गोरखाओं (हस्तिदल चतुर्य और अमर सिंह थापा के नेतृत्व में) ने गढ़वाल पर हमला किया, प्रद्युम्न शाह को मार डाला और इस पर कब्जा कर लिया। इस प्रकार 1804 से गढ़वाल गोरखा शासन के अधीन आ गया।

क्या आप जानते हैं?

- ➢ अजयपाल को संवारी ग्रन्थ में 'आदिनाथ' के नाम से संबोधित किया गया है।
- ➢ बलभद्र शाह पहले राजा थे जिन्होंने 'शाह' उपाधि को अपनाया
- ➢ मानशाह को गढ़वाल के इतिहास में 'गर्व-भंजन' उपाधि दी गई है और कवि भारत ने उनके वीरता के बारे में मनोदय काव्य में लिखा है।
- ➢ फतेह शाह के शासनकाल में, उनके दरबारी कवि रामचंद्र कंडियाल ने 'फतेह शाह यशोवर्णन' काव्य रचा।
- ➢ प्रद्युम्न शाह को ऐसा एकमात्र शासक माना जाता है जिसने कुमाऊं और गढ़वाल दोनों पर शासन किया।

C. परमार वंश के अधीन प्रशासन

- ✓ राजा की सत्ता: राजा सर्वोच्च प्राधिकारी थे, जिन्हें "वोलांडा बद्रीनाथ" कहा जाता था, जो देवता बद्रीनाथ के समान माने जाते थे। शासन व्यवस्था एक मंत्रालय द्वारा समर्थित थी, जिसमें विभिन्न महत्वपूर्ण अधिकारी थे:
  - धर्माधिकारी/राजगुरु: दरबार में धार्मिक कार्यों की निगरानी करते थे।
  - मुख्तार/वजीर: प्रधानमंत्री, जो राजा के बाद सर्वोच्च थे।
  - दफ्तरी: राज्य के राजस्व का प्रबंधन करता था और शाही फरमान (आदेश) जारी करता था।
  - दीवान: राज्य की आय और खर्च का हिसाब रखता था।
  - बक्शी: सेना के वेतन का प्रबंधन करता था।

- वकील: अन्य राज्यों के साथ बातचीत करता था; प्रसिद्ध वकील: पुरिया नैथानी।
- लेखवार: राजा के आदेशों और शिलालेखों को दर्ज करता था।

✓ स्थानीय प्रशासन: परगने: क्षेत्रीय विभाजन, जिनका नेतृत्व फौजदार (सैन्य कमांडर) करते थे।

✓ सुरक्षा: राजधानी की सुरक्षा का प्रबंधन गोलदार द्वारा किया जाता था।

D. परमारों की आर्थिक व्यवस्था

✓ **मुख्य राजस्व स्रोत**:
- भूमि कर, खनन (तांबा, लोहे, सीसा, बोरेक्स), वन आय, व्यापार, और जुर्माना।
- प्लेसर सोने के भंडार (रामगंगा, पिंडर, अलकनंदा नदियों) से कर। लोहे और तांबे की खदानों से भारी राजस्व प्राप्त होता था।
- वनों को ठेकेदारों को निश्चित आय के लिए पट्टे पर दिया जाता था।

✓ **राजस्व संग्रहण**:
- **नेगी-चरी प्रणाली**:
  - ☞ 'नेगी' किराया संग्रह करते थे और एक हिस्सा रखते थे; ये पद वंशानुगत हो गए थे।
  - ☞ **थोकदार/जागीरदार** (कमिंस, सयाना, गुंथेरे) क्षेत्रीय राजस्व संग्रह करते थे।
- **ग्राम स्तर**: प्रभावशाली स्थानीय व्यक्तियों को प्रधान के रूप में नियुक्त किया जाता था, जो थोकदार/जागीरदार के लिए राजस्व संग्रह करते थे।
- अन्य अधिकारी: **चोकड़**, **चोपदार** (राजस्व संग्रह), और **चानू** (संदेशवाहक)।

✓ **उद्योग**: समृद्ध उद्योग: कपड़ा, बर्तन (लकड़ी और धातु), पहाड़ी कागज (कागज), मिट्टी की मूर्तियां बनाना (राज्य-समर्थित)।
- प्रमुख कारीगर: श्यामदास, मोलाराम, मांगत राम, और केहरदास (गढ़वाली कलम के समर्थक)।

✓ **व्यापार**: कुमाऊं, तिब्बत और मैदानी इलाकों के साथ व्यापारिक संबंध थे।
- **मुद्रा**: **ताका**, **तिमासी** (जो श्रीनगर टकसाल में बनाई जाती थी)।
- **तौल और माप**: **तोल/टूल**
  - ☞ 1 पल = 5 तोल = 11 ग्राम
- **विनिमय प्रणाली** हाट बाजारों (बाजारों) में प्रचलित थी और प्रमुख हाट बाजारों में लालढांग, बडाहट, कोटद्वार, जोशीमठ, माणा, नीति, और देवप्रयाग शामिल थे।

✓ **परिवहन**: आक्रमणों को रोकने के लिए विकास सीमित था। सामान्य लोग पैदल यात्रा करते थे, जबकि अमीर लोग दंडी या घोड़ों का उपयोग करते थे।

E. न्याय व्यवस्था

✓ **पंचायत प्रणाली**: निर्णय पारंपरिक विशेषज्ञों द्वारा खुले पंचायती सभाओं में सुनाए जाते थे, और अपीलें फौजदार, थोकदार, या राजदरबार में की जाती थीं। गंभीर मामलों को राज्य के अधिकारियों द्वारा निपटाया जाता था।

✓ **सजा**: मृत्युदंड दुर्लभ था; सामान्य दंडों में जुर्माना, संपत्ति की जब्ती, निर्वासन, शारीरिक विकृति, या गर्म लोहे की छड़ ले जाने जैसी कठिन परीक्षाएँ शामिल थीं।

F. सैन्य संगठन

✓ **सैन्य संरचना:** दरबार की सुरक्षा के लिए एक स्थायी सेना होती थी, और थोकदार/जागीरदार अपनी अस्थायी सेनाएं भी रखते थे।
- विभाग: लाभा, बधाण, सालन।
- सैन्य कर्मियों को जगीर या रौत (राजस्व-मुक्त भूमि अनुदान) प्राप्त होता था।

✓ **भर्ती:** फौजदार और गोलदार भर्ती का प्रबंधन करते थे, और कभी-कभी राजा द्वारा नियुक्ति की जाती थीं, जिसमें हिंदू और मुसलमानों को विशेष रूप से आयुधागार के लिए भर्ती किया जाता था।

G. परमार शासन के अधीन समाज

✓ **सामाजिक संरचना:**
- समाज **पितृसत्तात्मक** था और सबसे बड़ा बेटा परिवार का मुखिया होता था।
- **जेठुली:** अलगाव के बाद संपत्ति वितरण के दौरान सबसे बड़े भाई को दी गई अतिरिक्त भूमि।